against such institutions which may be found to be functioning in the States in violation of the provisions of UGC Act, 1956. The Commission is also giving wide publicity in leading national dailies, in this regard.

The Monopolies & Restrictive Trade Practices Commission (MRTPC) has asked Director-General (I&R) to carry out investigations in respect of certain alleged fake universities under MRTPC Act, 1969. Association of Indian Universities (AIU) produces extensive literature on the recognised university courses/education through various Handbooks for the benefit of the students and others. AIU issues notification from time to time in 'Employment News' informing the students to ascertain the position on the standing of self-styled universities/institutions from Association of Indian Universities.

Government has already introduced an amendment Bill to UGC Act, 1956 in the Parliament on 2nd June, 1995. For contravening the provisions of Sections 22 and 23 of the UGC Act, the amendment Bill provides for imprisonment for a term of not less than 6 months which may extend to three years and fine of not less than one lakh but which may extend up to rupees 10.00 lakhs. The proposed punitive provisions could also be applicable to any association or body of individuals, every member of such association or other body wilfully conniving in violating the provisions of the University Grants Commission Act.

इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान और विकास कार्य

420. **श्री अजीत जोगी:** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) पिछले दो वर्षों के दौरान प्रतिवर्ष इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान और विकास कार्यों पर अलग-अलग कितनी धनराशि व्यय की गई है; और

(ख) अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में वर्ष-वार क्या उपलब्धियां हुई हैं;

रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा इलेक्ट्रानिकी और महासागर विकास विभाग में राज्य मंत्री (श्री एडुआर्डो फेलेरियो): (क) पिछले दो वर्षों के दौरान इलेक्ट्रानिकी विभाग की इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान एवं विकास से संबंधित योजनागत योजनाओं पर हुआ वर्ष-वार व्यय नीचे दिए अनुसार है:—

वर्ष	व्यय
	(करोड़ रुपए में)
1993-94	37.18
1994-95	63.59

(ख) पिछले दो वर्षों के दौरान कुछ मुख्य उपलब्धियों के ब्यौरे विवरण में दिए गए हैं।

विवरण

अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में उपलब्धियां

(1) वर्ष 1993-94 के दौरान उन्नत अभिकलन विकास केन्द्र (सी-डैक) ने परम मशीन, जो एक उच्च कार्यनिष्पादन वाली समानान्तर संसाधन अभिकलन मशीन है, के कार्यनिष्पादन में सुधार करने के लिए इसके दर्जे में वृद्धि की। वर्ष 1994-95 के दौरान नई पीढ़ी के परम का एक प्रोटोटाइप तैयार करने का पहला लक्ष्य हासिल किया गया; और आगे कार्य प्रगति पर है।

(2) अनुसारक नामक मशीनी अनुवाद प्रणाली का विस्तार तीन भाषाओं तक करके उसमें सीमित शब्दावली की कन्नड़-हिन्दी, तेलुगु-हिन्दी तथा मलयालम-हिन्दी प्रणाली को शामिल किया गया है।

(3) गैर दूरसंचार अनुप्रयोगों के लिए तंतु प्रकाशिकी प्रणालियों एवं उत्पादों की एक रेंज का विकास कर लिया गया है।

(4) इलेक्ट्रानिकी विभाग की भावी विमान संचालन प्रणाली मिशन (फैन्स) के अन्तर्गत कुछ

विशिष्ट परियोजनाओं ने महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिनमें विश्वव्यापी स्थिति निर्धारण प्रणाली (जीपीएस रिसीवर) उल्लेखनीय है।

(5) इलेक्ट्रानिकी विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत दो वर्षों में कई परियोजनाओं की प्रौद्योगिकी का अंतरण हुआ है।

(6) वर्ष 1993-94 के दौरान अनुसंधान के प्रयोजनों से मध्यमण्डल, समताप मण्डल, क्षोभ मण्डल (एमएसटी) रेडार का कार्य सफलतापूल र्वक पूरा किया गया। यह रेडार अब गंडकी (तिरुपति के पास), आंध्र प्रदेश स्थिर अन्तर विश्वविद्यालय ऊपरी वायुमण्डलीय अध्ययन केन्द्र में कार्यरत है।

(7) इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र (ईआरएण्डडीसी), तिरुवनन्तपुरम द्वारा सफलतापूर्वक पूरी की गई उल्लेखनीय परियोजनाओं में ये शामिल हैः नियंत्रण एवं यंत्रीकरण, विद्युत इलेक्ट्रानिकी, जन संचार, कृत्रिम बुद्धि, मत्स्य खोजी आदि के क्षेत्र में परियोजनाएं। ईआरएण्डडीसी, पुणे तथा ईआरल एण्डडीसी, कलकता ने भी अपने कार्यकलापों के संबंधित क्षेत्रों में कई परियोजनाऐं पूरी की हैं।

(8) पिछले दो वर्षों में वीएलएसआई डिपों की एक रेंज डिज़ाइन की गई है तथा इसका प्रोटोटाइप तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त, वीएलएसआई डिज़ाइन के लिए विन्यास कैड साधन का विकास कर लिया गया है तथा इसका व्यवसायीकरण कर दिया गया है। आण्विक कृत्रिम एपीटैक्सी (एमबीई), प्रकाल शीय स्टेपर जैसी सूक्ष्म इलेक्ट्रानिकी के लिए आवश्यक पूंजीगत उपस्कर का डिजाइन कर लिया गया है तथा उसका विन्यास कर लिया गया है।

(9) 4 एवं 6 मेव की इलेक्ट्रान त्वरक पर आधारित एक्स-रे मशीन, कैन्सर की चिकित्सा के लिए उच्च प्रौद्योगिकी वाला चिकित्सकीय लाइनेक उपस्कर तथा गैर-विध्वंसक परीक्षण के लिए रेडियो ग्राफिक लाइनेक प्रणाली का विकास प्रायोगिक सूक्ष्मतरंग इलेक्ट्रानिकी इंजीनियरी तथा अनुसंधान संस्था (समीर), बम्बई की हाल ही की कुछ प्रमुख उपलब्धियां रही हैं।

(10) इलेक्ट्रानिकी पैकेजिंग प्रौद्योगिकी एवं एरगो-नामिक डिजाइन केन्द्र (सप्टेड) की स्थापना की गई है। इस केन्द्र की सहायता से समीर गुणवत्ता के विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करने के लिए उद्योग को कुल उत्पाद डिजाइन में सहयोग दे पाता है।

(11) बम्बई में उपनगरीय ईएमयू के लिए व्यावसायिक डीसी चॉपर चालू किए गए तथा इस प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने वाली पहली ट्रेन ने सफलतापूर्वक कार्य करना शुरू कर दिया। रेलवे संकेतन के लिए ठोस अवस्था अंतग्रथन प्रणाली की इंजीनियरीकृत इकाई का विकास किया गया, क्षेत्रीय परीक्षणों आदि की दृष्टि से इसमें महत्वपूर्ण प्रगति हुई।

(12) ट्रांस्प्यूटर पर आधारित उच्च कार्यनिष्पादन की नियंत्रण तथा यंत्रीकरण प्रणाली (चरण I) का विकास कर लिया गया है तथा इसकी प्रौद्योगिकी का अंतरण कर दिया गया है।

(13) वैयक्तिक कम्प्यूटर पर आधारित वितरित नियंत्रण प्रणाली, उन्नत संयंत्र स्वचालन तथा नियंत्रण प्रणाली, तंत्रिकीय नेटवर्क पर आधारित सीक्वेंस इवेंट रिकार्डर, बहुपाश नियंत्रक जैसी प्रौद्योगिकियों का विकास कर लिया गया है तथा इनकी तकनीकी जानकारी का अंतरण कर दिया गया है।

उपर्युक्त के अलावा औद्योगिक इलेक्ट्राल निकी संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत कई परियोजनाएं पूरी कर ली गई हैं तथा पिछले 2 वर्षों के दौरान इनकी तकनीकी जानकारी अंतरित कर दी गई है।

(14) राष्ट्रीय साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र (एनसीएल सटी) ने भाषा शिक्षण रूपरेखा विद्या के लिए हिन्दी पाठ; अंग्रेजी से देवनागरी में लिप्यंतरण सॉफ्टवेयर; हाई स्कूल गणित में समाधानपरक अनुदेश के लिए एक बुद्धिपरक शिक्षण प्रणाली; एक मुख्य तेल कम्पनी के

लिए पाइपलाइन नियतन प्रणाली का विकास किया है।

(15) अर्नेट परियोजना सफलतापूर्वक पूरी कर ली गई है। देश भर में 500 से भी अधिक संस्थान, जो शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं, सहयोग एवं संचार के लिए सूचना प्राप्त करने, उसे आपस में बांटने तथा उसे दूसरे स्थान पर प्रेषित करने के लिए इस नेटवर्क का व्यापक रूप से इस्तेमाल कर रहे हैं।

Emergence of diseases

421. SHRI RAHASBIHARI BARIK: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether the Government are aware of the growing threat posed by the emergence of new diseases like AIDS and re-emergence of old ones such as malaria, cholera, dengue, TB and plague; and

(b) if so, the steps proposed to be taken to prevent the emergence of these diseases?

THE MINISTER OF HEALTH AND FAMILY WELFARE AND MINISTER OF WATER RESOURCES (SHRI A.R. ANTULAY): (a) Yes, Sir.

(b) The main strategies adopted to prevent/control the mentioned diseases are as under:—

1. *AIDS* A comprehensive Scheme for the Prevention & Control of HIV/AIDS is currently under implementation throughout the country. The strategies of the Programme consist of (i) behaviour change by creation of mass awareness about HIV/AIDS; (ii) blood safety and rational use of blood (iii) control of sexually transmitted diseases; (iv) surveillence and Clinical Management of HIV/AIDS infected persons.

2. *T.B.* The Government has recently revamped the Tuberculosis programme and has introduced and revised strategy for the control of Tuberculosis using multi-drug chemothreapy (MDT).

3. *Malaria:* The main strategies adopted are (i) Early case detection and prompt treatment; (ii) Vector control by indoor spraying in rural areas with annual parasite incidence 2 & above, with appropriate insecticides and by recurrent anti-larval measures in urban areas;

(iii) Health education and community participation.

4. *Cholera:* Good sanitation & Hygiene and safe drinking water marketly reduce the risk of transmitting entericpathogens including cholera various. Therefore the highest priority is given to practicing the basic principles of sanitation regarding human waste disposal, personal hygiene & food safety as well as ensuring that safe water supply is available, apart from other medical treatment and health education.

5. *Plague:* Activities like survillance, training of workers and upgradation of laboratories have been initiated in the wake of the recent outbreak of Plague in the country.

6. *Dengue:* The dengue fever is parastic infection in which mosquito control measures and chemoprophylaxis are important preventive activities being presently undertaken apart from Health Education in high incidence areas.

Navodaya Vidyalayas in Assam

422. SHRI PARAG CHELIHA: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) the details of the Navodaya Videlayas sanctioned so far for Assam;

(b) the details of the Navodaya Vidyalayas which are actually functioning in the State as on date; and

(c) the details of the problems due to which some sanctioned Navodaya Vidyalayas could not start functioning?